International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 5.401 Volume 6, Issue 5, May 2019
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

.प्रवासी हिन्दी साहित्य के विविध आयाम

प्रस्तुतकर्ता

उमा चौधरी
प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
New Horizon College Kasturi Nagar Bangalore - 43

प्रवासी हिन्दी साहित्य के विविध आयाम

प्रवासी साहित्य का संबंध प्रवासी लोगों द्वारा लिखे गए साहित्य से है।प्रवास की परिभाषा संबंधी सामग्री विभिन्न शब्द कोषों में से प्राप्त होती है। प्रवास शब्द से अभिप्राय है विदेश वास या अपना घर या देश त्याग कर दूसरे देश में निवास करना। इसी आधार पर प्रवास में रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है।(1)

प्रवास शब्द अपने आप में जितना खुशनुमा व खुशबू देने वाला है उतना ही मन को आहत करने वाला भी है। प्रवासी हिन्दी साहित्य वह साहित्य है जिसे भारत से सुदूर रहने वाले भारतीयों ने कवि, लेखक, कहानीकार, उपन्यासकार और अनुवादक के रुप में अलग-अलग ढंग से रचा है।जिसमें उन्होंने अपने जीवन के अनुभव को प्रस्तुत किया है। जिसके अन्तर्गत उन्होंने अपना सुख भी बताया है तथा जो दंश झेला उस पीड़ा को भी बताया है। भाषा और साहित्य किसी भी प्रकार की भौगोलिक सीमाओं को स्बीकार नहीं करते क्योंकि साहित्य मानवीय अनुभवों की अभिव्यक्ति होती है इन अनुभवों का स्थान उसकी सीमाओं से मुक्त होना स्वाभाविक है।प्रवासी हिंदी कथा साहित्य निश्चित रुप से कथानक,शैली और शिल्प की दृष्टि से भिन्न और विशिष्ट पहचान रखता है।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

साहित्य समाज का दर्पण है और हिन्दी साहित्य अपने आप में एक अनूठी खनिज सम्पदा है। हिन्दी साहित्य का विशाल खजाना केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के हर कोने में उपलब्ध है। प्रवासी हिन्दी साहित्य भारतीय मूल के लोगों द्वारा ज्यादातर मारीशस, फिजी आदि देशों में लिखा गया है। विदेशों में बसे भारतीयों की मन : स्थितियों को कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त करने में हिन्दी साहित्य का विशेष योगदान है।
उषा प्रियंवदा जी हिन्दी कथा जगत में विशिष्ट कथाकार के रुप में जानी जाती है। उषा जी भारत और अमेरिका के बीच एक सेतु का काम कर रही हैं।एक संस्मण में वह लिखती है कि घर लौटना एक मधुर और कचोटभरा अवसर होता है।घर से हम विदेश के लिए निकलते हैंतो आँखो में एक स्वप्न होता है। पर साथ ही कहीं छुपा यह बोध भी रहता है कि हम पूरी तरह से घर नहीं लौट पाएँगे। हमारा एक अंश हमारी भावनाओं और अनुभवों का एक भाग जैसे पीछे रह जाता है।(2)
उषा प्रियंवदा की कुछ ऐसी ही कहानियाँ हैं जिसमें आज के युग की सबसे बड़ी चुनौती अकेलेपन की समस्या को दिखाया गया है।

स्वीकृति कहानी में उषा प्रियंवदा कहानी की नायिका जया की समस्याओं को चित्रित किया है। शादी के कुछ ही दिनों बाद जया को विदेश में नौकरी के लिए जाना पड़ता है। जया विदेश जाना नहीं चाहती परन्तु उसका पति उस पर बार-बार दबाव डालता है। वह अपने पति सत्य के साथ भारत में रहकर ही जीवन-यापन करना चाहती है। सत्य जया को समझाते हुए कहता है कि हम जिस स्थिति है, उसमें पन्द्रह सौ डालर का आफॅर अस्वीकार नहीं कर सकते।(3) वहाँ उसे बहुत अकेलापन महसूस होता है। सत्य ने जया के रुप-रंग, उसकी भावनाओं या इच्छाओं पर कभी ध्यान नहीं दिया। साथ रहने पर भी शायद सत्य ने यह नहीं जाना कि प्राय: रात को जाग कर वह छत के अंधेरेपन को ताकती रहती है जबकि वह स्वंय गहरी नींद में सोया रहता। सत्य ने पैसों के लिए उसे विदेश भेजकर उसकी सारी इच्छाएं मार दी। जया खुश है या नहीं। सत्य को इन सब से कोई फर्क नहीं पड़ता।

ब्रिटेन के परिवेश में रचे-बसे और पंजाब की माटी में पले-बढ़े कहानीकार तेजेन्द्र शर्मा जी एक बहुचर्चित कथाकार हैं। कहानीकार तेजेन्द्र शर्मा जी को प्रवासी लेखक जैसे शब्द से चिढ़ है। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों में तेजेन्द्र शर्मा एक ऐसे कहानीकार हैं जो सामाजिक बदलाव का एक सिरे से लिखते हुए आंतरिक चेतना की भूमि को भी मानसिक धरातल पर रखते हैं। वे कहते हैं मैं शायद उन गिन-चुने लेखकों में शामिल हूँ जिनके लेखन में आज का समाज जगह पाता है। मैंने तो लंदन में मुहिम चला रखी हैं कि हमें अपने लेखन को भारत का प्रवासी साहित्य नहीं बनाना है बल्कि हमें इसे ब्रिटेन का हिन्दी साहित्य बनाना है। इसके लिए जरुरी है कि हम ब्रिटेन में रहते हुए नोस्टेलाजिया से ग्रस्त न रहें और अपने आस-पास के जीवन को अपने साहित्य में उतारें। (4)

तेजेन्द्र शर्मा जी की कहानियाँ केवल एक प्रवासी की कहानियाँ नहीं, ये कहानियाँ विश्व के किसी कोने में बसे मनुष्य के अंतर्मन की गहराईयों को छूने वाली और उनकी पीड़ा को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली कहानियाँ है।

प्रवासी साहित्यकार इन्हीं परिस्थितियों से रू-ब-रू होकर प्रवासी जीवन के अनछुए पहलुओं को बेहद आत्मीय तरीके से अपनी कहानियों में वर्णित कर रहे हैं। तेजेन्द्र जी ने अपनी कहानी अभिशप्त के माध्यम से एक प्रवासी भारतीय के उपेक्षित जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। रजनीकांत का भारत से लंदन जाना और वहाँ की संस्कृति एंव परिवेश में स्वंय को फिट नहीं पाना उसके जीवन का कटु सत्य बन जाता है। रजनीकांत व उसकी पत्नी निशा के संबंध कानूनी कटघरे में न जाकर एक ही छत के नीचे सांस लेते हैं। तेजेन्द्र जी ने यह स्पष्ट करना चाहा है कि विदेशी परिवेश में वैवाहिक बन्धन व्यक्ति की अभिरुचि, इच्छा व दृष्टिकोण के अलग-अलग होने के कारण अप्रसांगिक हो जाते हैं। अपनों से विलग होकर असहनीय पीड़ा को व्यक्ति अन्दर ही अन्दर महसूस करता है और प्रत्येक स्थित को नियति मानकर भोगने के लिए अभिशप्त हो जाता है। वर्तमान युग में अनेक मध्यमवर्गीय भारतीय परिवारों द्वारा अपनी बेटियों की शादी किसी अप्रवासी युवा से करने का चलन कटु सत्य है। ऐसे रिश्ते करके गौरव-बोध से भरना , इतराना यही मानसिकता हो गयी है। लेकिन इन रिश्तों में अधिकतर दुख ही देखने को मिलता है।(5)

हवन सुषम बेदी द्वारा लिखित उपन्यास है। हवन अमेरिका में प्रवासियों की जिन्दगी का यथार्थ चित्रण करने वाला उपन्यास है। विदेशी सभ्यता की भौतिक चमक-दमक से आकर्षित विदेश जाने वाले व्यक्ति वहाँ पहुँचकर उल्लास और आनंद को प्राप्त करने के प्रयास में अपने जीवन को कैसे होम कर रहे हैं। इसका बेजोड़ चित्रण हवन में हुआ है। सुषम बेदी का उपन्यास हवन तो निश्चित ही समस्त अस्मिता को गवाँकर अगली पीढीं के लिए होम करती हुई पूरी पीढ़ी की त्रासदी का सफल चित्रण है।(6)

लौटना सुषमा बेदी द्वारा लिखित दूसरा उपन्यास है।इसमें एक औरत के अस्मिता की खोज की कहानी है जो एक नये परिवेश में अपने टिकने के लिए एक सही बिन्दु तलाश रही है। हजारों ख्वाहिश लेकर मीरा विजय से विवाह करवा कर अमेरिका पहुँचती है। मीरा एक नर्तकी है और विदेश में अपने इस शौक को आगे बढ़ाना चाहती है परन्तु उसका पति जो बड़े-बड़े सपने दिखाकर विदेश ले आया था। वह अपने वादों से मुकर जाता है। मीरा बार-बार आगे बढ़कर भी किसी अदृश्य बिंदु पर लौट आने को बेबस हो जाती है।(7)

आधुनिक युग में व्यक्ति की अधिकार-सजगता ने उसकी स्थिति मान्यताओं व संस्कारों को अत्यधिक प्रभावित किया है। उसके लिए प्राचीन मान्यताएं बदल चुकी हैं। व्यक्ति अपने जीवन में दूसरे का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करता। भारतीय समाज की अपेक्षा विदेशी परिवेश में लिव-इन रिलेशनशिप, प्रेम-प्रसंग, विवाह-विच्छेद, पुनर्विवाह इत्यादि आसानी से स्वीकार किए जाते हैं। आज भारत में लिखी जा रही अधिकांश हिंदी कहानी स्त्री विमर्श के नाम पर नज़र आती है जबकि प्रवासी कहानियाँ मानवीय यथार्थ के भीतर मूल्यों की तलाश करती

नज़र आती हैं। उनकी कहानियों ने कहानी के माध्यम से अनेक सवाल उठाकर हमारी समाज व्यवस्था, संकुचित मानसिकता और विशेषकर पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था के प्रति एक करारा व्यंग भी किया है। प्रवासी साहित्य के अन्तर्गत कहानीकार पूरी ईमानदारी से आधुनिक समाज खासकर भारतीय लोगों की सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं का चित्रण करते हुए समाज की दशा व दिशा को सुधारने का अथक प्रयास कर रहे हैं।

प्रवासी कहानियाँ विश्व के किसी कोने में बसने वाले मनुष्य के अंतर्मन की गहरईयों को छूने वाली और उनकी पीड़ा को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली कहानियाँ हैं। यह कहानियाँ भारतीय मन को अधिकतर समझती हैं और उनके दर्द को उनके हर्ष-विषाद को वैश्विक विस्तार देती हैं। कहानियाँ तो समाप्त हो जाती हैं किन्तु पाठकों के दिलो-दिमाग पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं। प्रवासी कथा साहित्य जिसका रूप-रंग भारत के पाठकों के लिए एक नयेपन का बोध देता है। मूल रूप से कहा जाए तो भारतीय मूल के लोग पूरे विश्व स्तर पर बिखरे पड़े हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(1) हिन्दी प्रवासी कथा साहित्य – डा कल्पना गवली – पृष्ठ संख्या – 238
(2) शून्य तथा अन्य रचनाएँ – उषा प्रियंवदा –पृष्ठ संख्या - 162
(3) स्वीकृति – उषा प्रियंवदा – पृष्ठ संख्या - 83
(4) हिन्दी प्रवासी कथा साहित्य – डा कल्पना गवली – पृष्ठ संख्या – 55
(5) अभिशप्त – तेजेन्द्र शर्मा
(6) हवन – सुषम वेदी
(7) लौटना – सुषम बेदी